हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-३ अङ्क-९ मई, २००७

सम्पादकीय

मातृ-दिवस और बुद्ध-पूर्णिमा

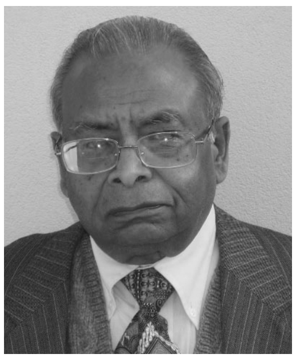

इस वर्ष ऑस्ट्रेलिया में रविवार, १३ मई को मातृ-दिवस (मदर्स-डे) मनाया जाएगा। माँ के महत्व की हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं। सभी समाज और संस्कृतियों में माँ का विशिष्ट स्थान होता है और होना भी चाहिए। माँ के बिना किसी भी समाज में प्रगति नहीं हो सकती है। कहावत है कि एक माँ को शिक्षित करने से पूरा गाँव शिक्षित हो जाता है। भारतीय संस्कृति में तो हर दिन ही मातृ-दिवस होता है परन्तु पाश्चात्य देशों में वर्ष में कम से कम एक दिन तो माँ का स्मरण किया जाता है। तो इस दिन सभी माताओं को बहुत-बहुत बधाई। आपकी संतानें आपका ध्यान रखें और अपने माता-पिता का नाम रोशन करें।

मई में बुद्ध जी का जन्म दिवस (२ मई) तथा बुद्ध-पूर्णिमा (४ मई) भी पड़ती है। बुद्ध धर्म की लोकप्रियता आजकल बहुत तेज़ी से पाश्चात्य देशों में बढ़ रही है। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा और त्याग का जो संदेश दिया वह आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आज से हज़ारों वर्ष पूर्व था। बुद्ध धर्म का उद्भव भले ही भारत में हुआ हो, उसके अनुयायी भारत से अधिक अन्य देशों में कहीं अधिक हैं। आज जब विश्व में, शक्तिशाली राष्ट्र, विश्व की समस्याओं का हल युद्ध में ढूँढ रहे हैं, स्मरणीय है कि सम्राट अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त करने के पश्चात युद्ध की निरर्थकता को महसूस किया था और अपनी संतानों को बुद्ध-धर्म का प्रचार करने चीन, श्रीलंका आदि देशों में भेजा था।

मातृ-दिवस के अवसर पर, हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क के काव्य-कुंज भाग में सुभाष शर्मा की एक मर्मस्पर्शी रचना है। इस अङ्क में वी०सी०ई० की शृंखला में एक अन्य विद्यार्थी के अनुभव प्रस्तुत किए गए हैं और 'कुछ खोया, कुछ पाया' शृंखला में एक बुज़ुर्ग व्यक्ति के विचार हैं। नकेल नामक कहानी का अंतिम भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

- दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

काव्य-कुंज

प्यार की उमंग

- हरिहर झा,
मेल्बर्न, विक्टोरिया
ऑस्ट्रेलिया

मोम की कसक
जो दर्द बन गई,
पिघल-पिघल,
लौ से दूर हो गया।
आँसुओं की गर्मी
से कराह कर,
खण्ड में बँटा तो
चूर हो गया॥

राग-रागिनी के
लय विलय हुए,
छटपटाता भाव मौन हो गया।
ग्रीष्म चूसता रहा समुद्र को,
अंधकार
चाँद को ही डस गया॥

लड़-झगड़
नदी सुमेरु शृंग के,
केश घने
खींच कर पकड़ रही।
वायु भय से काँप लिपट रही,
पर्वतों की चोटियाँ जकड़ रही॥

सुन विलाप
जलपात जब हँसा,
क्यों हँसा
जो गिर रहा पाताल में।
अन्तर्मुखी हो,
सुन रहा गाती हुयी,
माधुरी के स्वर
अनोखी ताल में॥

किरण भी
यह देखकर हँस उठी,
हँस उठीं आकाश की
गहराइयाँ।
दूर हुई, छिटक कर बह गयी,
खो गयीं लो
ग़मों की परछाइयाँ॥

कली मुस्कुरायी,
देखकर सभी,
चेहरे ख़ुशी से खिल रहे भले।
चाँदनी नज़र मिलाती चाँद से,
फूल तितलियों से
मिल रहे गले॥
अभिसार अर्चना का रूप ले,
मेघ की उड़ान नृत्य बन गयी।
दामिनी का नृत्य
प्यार हो उठा,
प्यार की उमंग
फिर बहक गयी।

क्यों बार बार जी करता है, जाऊँ मैं वतन

-सुभाष शर्मा, मेल्बर्न

बचपन बीता जहाँ पर,
वहीं रहता है मन।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

हर ओर यहाँ ख़ुशहाली है,
हर रात यहाँ मत वाली है।
गलियों बाज़ारों में देखो
हर ओर यहाँ दीवाली है॥

नदियाँ पहाड़, सागर झीलें,
सब मन हर लेने वाली हैं।
हर ओर महकता गुलशन है,
हर ओर चैन ख़ुशहाली है॥

चन्दा सूरज सब साथ यहाँ,
धरती अम्बर बरसात यहाँ
फिर बरसाती मिट्टी में नहीं
क्यों वो सौंधा पन,
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

जब मैं घर देर से आता था,
अम्मा को गुस्सा आता था।
फिर भी वो तवा चढ़ाती थी
और फुलके गरम बनाती थी।
पहले जाओ कपड़े बदलो
वो हमको डाँट लगाती थी,
सरसों का साग बनाती थी
मेथी की छौंक लगाती थी॥

सरसों, पालक, धनिया, मेथी,
हर चीज यहाँ पर है मिलती,
फिर अम्मा के हाथों की
इसमें है क्यों नहीं सुगन्ध,
क्यों बार बार
जी करता है जाऊँ मैं वतन॥

डाकिया जो चिट्ठी लाता था
बिन पढ़े ही हाल सुनाता था,
वह राम का नाम लिवाकर ही
हम से चिट्ठी खुलवाता था।
इन्टरव्यू है या है रिज़ल्ट
वह पूछ के आगे जाता था,
मैं मेम से शादी कर लूँगा
वो दादी को डरवाता था॥

है मेल यहाँ, ई-मेल यहाँ,
पर पोस्टमैन से मेल कहाँ,
चिट्ठी लानेवाला फिर से
क्यों करता नहीं सगन।
क्यों बार बार
जी करता है जाऊँ मैं वतन॥

कलुआ क्या चाय बनाता था
पर बेंच पे गिलास थमाता था,
लल्लू क्या पान लगाता था
बिन बातों के बतियाता था।
वो रोज़ हिसाब बताता था
मैं पूरा नहीं चुकाता था,
फिर भी उधार पर दे उधार
वो हमको पान खिलाता था॥

कॉफ़ी टेबल और चाय यहाँ,
पर कलुआ वाली बात कहाँ,
फिर बेंच पे बैठ के चाय पियूँ
क्यों करता है ए मन।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

जब सात समुन्दर पार
मेरे जाने की बारी आई थी,
हफ़्तों पहले, दादी अम्मा को
सोच के नींद न आई थी।
मुझे कौन खिलाएगा खाना
यह बात समझ ना पाई थी,
मेरे जाने के दिन दादी ने
मिसरी की खीर खिलाई थी॥

है दूध मलाई खीर यहाँ,
दादी की मिसरी मिले कहाँ,
क्यों उन हाथों से
फिर खाने को
करता है ए मन।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

मैं एयरपोर्ट जब आया था,
दोस्तों का जमघट आया था,
कलुआ, ललुआ दोनों ने ही
दिल्ली का टिकट कटाया था।
जैसे दरवाज़ा पार किया
सब का ही
दिल भर आया था,
कलुआ खड़ूस की आँखों में
देखा पानी भर आया था॥

क्या सुरा पान सुन्दरियाँ थीं,
क्या हवा में उड़ती परियाँ थीं।
जैसे विमान ऊपर पहुँचा
तो सूना था गगन।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

अम्मा की चिट्ठी क्यूँ
भीगी-भीगी सी आती है,
पानी की बूँदों पर जैसे
नीली स्याही उतराती है।
कोई कोई लाइन तो
बस मुश्किल से
समझ में आती है,
बरसात अधिक होती है या
उसे मेरी याद सताती है॥

वो पागल है जो रोती है,
यह बात समझ में आती है
फिर क्यों चिट्ठी पढ़ते ही
आँखें हो जाती हैं नम।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

जब भूख ज़ोर से लगती है,
माँ तेरी याद सताती है,
जब सिर दुखता पढ़ते-पढ़ते
तू पास क्यों नहीं आती है।
अब बाथरूम में तू मुझको
तौलिया नहीं पकड़ाती है,
इसको बनवास बताती है,
तेरी बात समझ में आती है,
फिर छोड़-छाड़ सब आ जाऊँ
क्यों करता है ए मन।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

हर दीवाली और होली पर
उन सबकी याद सताती है,
हम किसे बताएँ जा कर
हमें याद वतन की आती है।
छोटी-छोटी, मीठी बातें
रह-रह कर खूब सताती हैं,
यादों की झड़ी लगे
फिर तो भई खूब
बरस कर आती हैं॥

सोना भी यहाँ पंछी भी यहाँ,
फिर भी पंछी के प्राण वहाँ।
सोने का पिंजरा तोड़ उड़ूँ
क्यों करता है ए मन।
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

बापू की चिट्ठी आती है
तो एक बात लिख आती है,
सब दोस्त नमस्ते लिखते हैं
उन्हें याद तुम्हारी आती है।
और सभी पूछते हैं हम से
क्या याद तुम्हें भी आती है,
लिख देता हूँ फ़ुरसत ही कहाँ
जो याद किसी की आती है॥

यहाँ भूख अगर जो आती है
तो आते ही मर जाती है,
फिर पल-पल धरती पर
मिटने को करता है क्यों मन
क्यों बार बार
जी करता है, जाऊँ मैं वतन॥

क्या खोया, क्या पाया

-शकुंतला अग्रवाल

(इस विषय पर पहले भी आप कई लेख पढ़ चुके है। लीजिए प्रस्तुत है बुज़ुर्ग की दृष्टि से एक अनुभव- सम्पादक)

समय बड़ा बलवान है। जीवन तो अपने साथ समेटे हुए मुठ्ठी की बन्द रेत की भाँति कब और कैसे सरकता जाता है पता ही नहीं चलता। यों तो जीवन क्रम ही खोना और पाना है परन्तु प्रवासी हुई सन्तानों के साथ जीवन का अन्तिम प्रहर व्यतीत करने की लालसा जिन बुज़ुर्गों को विदेश में खींच लाती है उन की मनोदशा क्या कहें? यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी देसी वृक्ष को विदेशी मिट्टी में रोपने की कोशिश और वह वृक्ष पुरातन परिवेश को अपने में पचाये हुए, अब इस नये वातावरण को आत्मसात करने का प्रयत्न करता है। दुनिया की सिमट रही दूरियों के कारण यद्यपि जीवन शैली की भिन्न मान्यताएँ अपनी पहचान खो रही हैं और समरस सी जीवन शैली विकसित हो रही है, फिर भी अपनी छाप और पहचान को भुला देना इतना आसान नहीं होता। मैं काफी समय से ऑस्ट्रेलिया में रह रही हूँ। भारत से चली तो बड़ों को चरण स्पर्श किया, समवयस्कों को हाथ जोड़ कर गले लगा कर अभिवादन किया और बच्चों ने चरण स्पर्श कर विदा दी तो विदेश में आ कर हैलो, हाय से कुशल पूछने की परिपाटी देखी। कई बार तो अभिवादन के लिये जुड़े हाथ जुड़े ही रह जाते। कैसा लगता था? सीखना ही पड़ा। स्वदेश में रहते हुए गली मुहल्ले में भी रिश्ते -- ताई, चाची, बुआ, मौसी -- घर जैसे बने रहते थे पर यहाँ तो हर रिश्ते की पहचान व्यक्ति के नाम से ही होती है। गुरु भी नाम से ही पुकारे जाते हैं। पास-पड़ोस का सुख-दुख सबका साझा सुख-दुख हुआ करता था पर यहाँ बग़ल वाले पड़ोसी तक आप से अनभिज्ञ रहते हैं। कभी आते-जाते कोई मिल गया तो हैलो हो गई, या मौसम की चर्चा, और बात समाप्त।

विदेश का जीवन बहुत एकाकी व कभी-कभी बहुत उबाऊ भी लगता है। घर के सदस्य जब काम पर और बच्चे विद्यालय चले जाते हैं तो घर के बुज़ुर्ग अपने आप को किसी न किसी काम में अटका कर सप्ताह के पाँच दिन किसी प्रकार निकालते हैं। यह कहानी उन बड़ी उम्र के लोगों की है जो कार चलाना नहीं जानते और सार्वजनिक परिवहन का भी पर्याप्त उपयोग करने में असमर्थ होते हैं। फिर जो अँग्रेज़ी भाषा से अनभिज्ञ हैं, उनकी तो और भी मुश्किल है। वह तो भला हो जी टी० वी० का जो आज उनके मन बहलाव का प्रमुख साधन बन चुका है।

(क्रमश:)

वी०सी०ई० हिन्दी के मेरे अनुभव

(पिछले अङ्क में आपने स्वेता घटी के वी०सी०ई हिन्दी कक्षा के कुछ अनुभव पढ़े। लीजिए अब इसी शृंखला में प्रस्तुत हैं एक और विद्यार्थी के अनुभव - सम्पादक)

-ऐश्वर्य हटवाल,
कक्षा ११,
बैलारॅट और क्लेरॅनडा, कॉलेज, बैलारॅट

मैं लगभग पाँच छह वर्ष पूर्व अपने परिवार सहित आस्ट्रेलिया में रहने आया हूँ। यहाँ स्कूल में मैं बहुत खुश था, परन्तु हिन्दी-भाषा की पढ़ाई अवरुद्ध हो जाने से कुछ कमी लग रही थी। मैं धीरे-धीरे हिन्दी लिखना पढ़ना भूलने लगा था।

जब मुझे पता चला कि मेल्बर्न के ब्लैकबर्न स्कूल में हिन्दी-भाषा की कक्षायें चल रहीं हैं तो मैं बहुत प्रसन्न हुआ, और मैंने वहाँ प्रवेश ले लिया। वी० सी० ई० की हिन्दी कक्षाओं में अध्ययन करने से मेरे शब्द ज्ञान में वृद्धि हुई और शुद्ध हिन्दी के नवीनतम शब्दों के वाक्य प्रयोग तथा उच्चारण करने का अभ्यास हो गया। इन कक्षाओं में आधुनिकतम महत्वपूर्ण कई विषयों, जैसे देशान्तरण, भूमण्डलीकरण, समाज में महिलाओं का स्थान, आदि में मेरा पर्याप्त ज्ञान-वर्धन हुआ। भारत देश के इतिहास, बहुरंगी संस्कृति तथा त्योहारों का परिचय मिला और प्राचीन भारत की समृद्ध सभ्यता की झलक मिली। मैं अपने हिन्दी-भाषा के शिक्षक श्रीमान् ठेठी तथा श्रीमती ठेठी को धन्यवाद देता हूँ जिनके सुनियोजित मार्ग-दर्शन में मैं यहाँ आस्ट्रेलिया में भी अपनी हिन्दी-भाषा की पढ़ाई की निरन्तरता बना सका तथा लिखित एवं मौखिक दोनों प्रकार की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सका।

मैं अपनी पूज्य दादीजी तथा पिताजी-माताजी का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी, मेरा उत्साह बढ़ाया, तथा अपने अत्यन्त व्यस्त जीवन से भी समय निकाल कर बहुत प्यार से तथा हर प्रकार से मुझे सहयोग दिया।

अब हिन्दी-भाषा के पठन-पाठन में मेरी रुचि जागृत हो गयी है, और मैं प्रयत्न करूँगा कि भविष्य में इस भाषा के प्रचार-प्रसार तथा उन्नति में मैं भी कुछ योगदान कर सकूँ।

कहानी-नकेल (भाग ५ - अंतिम)

-डा० फ़कीरचंद शुक्ला

(इस कहानी के पिछले भागों में आपने पढ़ा कि राजीव को अचानक अपने घर में अपने बड़े भाई को देखकर बहुत विस्मय हुआ क्योंकि भैया ने उसे विजातीय वंदना से विवाह करने पर ठिठुरती सर्दी में उसकी नव-विवाहिता पत्नी के साथ घर से बाहर निकाल दिया था। उन दोनों में पत्र व्यवहार तक न था । भैया के अचानक आ जाने की वजह जानने के लिए राजीव बेचैन था। आखिर भैया ने बताया कि उन्होंने अरुणा के लिए लड़का देखा है। घर बार अच्छा है। बाप की पंसारी की दुकान है। तीन बेटे हैं। दो तो बाप के साथ ही दुकान पर काम करते हैं और तीसरा जिसे अरुणा के लिये देखा है इसी शहर में कपड़े के मिल में नौकर है। बहुत कुछ कहना चाह कर भी राजीव कुछ नहीं कह पाया। मूक उस श्रोता की तरह सुनता रहा जिसे उस विषय में कोई दिलचस्पी न हो और उसे मज़बूरन सुनना पड़ रहा हो। लीजिए अब कहानी का अंतिम भाग पढ़िए।
- सम्पादक)

एकटक कुछ देर मेरी ओर देखने के बाद भैया पर्दा और उठाते हैं- 'लड़के वाले चाहते हैं कि शादी इसी माह कर दी जाये- वे ज़्यादा दिन इंतज़ार नहीं करना चाहते। मगर इतनी जल्दी पैसों का बंदोबस्त कैसे कर पाऊंगा? कुछ समझ नहीं--' कहते कहते रुक जाते हैं। दरवाज़े की ओर देखने लगते है। वन्दना खड़ी है। वे नज़रें झुकाए दोबारा सोफ़े पर आ बैठते हैं। शायद उन्हे वन्दना का आना अच्छा नहीं लगा हो। शायद बिना पर्दे के। वन्दना ने तो दुपट्टा भी नहीं ओढ़ रखा। वैसे भैया एकदम पुराने विचारों के हैं। आधुनिक युग के अनुसार थोड़ा-सा भी स्वयं को नहीं बदल पाए हैं। एक बार शहर में किसी की शादी में गये थे। कई दिन तक आ कर बोलते रहे थे-' कैसे निर्लज्ज लोग है। ससुर से भी पर्दा नहीं, औरों की तो बात ही क्या करनी। मान मर्यादा तो इन लोगों ने जैसे बेच खाई है। हमारी बहू ने ऐसा किया तो उसी दिन बोल देंगे या तो हमें छोड़ दो या फिर यह नया फैशन।'

'कहीं से दो चार हज़ार का बंदोबस्त हो जाए--' आखिर भैया के कंठ से वास्तविक बात फूट ही पड़ती है। उनका आशय मैं समझता हूँ।

'क्यों नहीं, दो चार हज़ार तो कुछ भी नहीं, जितना चाहे ले लो' वन्दना के इन शब्दों ने जैसे उनके लिये कुबेर का ख़ज़ाना खोल दिया हो। चेहरे पर एक अजीब- सा रंग फैल गया लगता है। 'हां, दो चार हज़ार तो कुछ भी नहीं। बैंक वाले तो कई हज़ार लोन पर दे देते हैं।' खतरे का सायरन बजते ही लड़ाई के दिनों में जैसे एकदम लाइटें गुल कर दी जाती हैं और घुप्प अंधेरा छा जाता है, वन्दना के इन शब्दों ने भी शायद ऐसा ही किया है। भैया के चेहरे पर दोबारा आये परिवर्तन को देखने का साहस मुझ में नहीं। मैं नज़रें झुका लेता हूँ।

कुछ पल की खामोशी के बाद भैया फुसफुसाते हैं, आवाज भर्रायी हुई लगी- 'हाँ, इसी सिलसिले में शहर आया था। थोड़ी फुर्सत मिली सोचा तुम लोगों से मिलता चलूँ' अपना थैला उठा कर खड़े हो जाते है। जेब से पाँच का नोट निकाल कर वन्दना की ओर बढ़ाते हैं- 'तुम्हरे शगुन के हैं।'

मुझे लगता है अभी विस्फोट होगा। वन्दना नोट पटक कर फट पड़ेगी - 'सम्हाल कर रखियेगा इन्हें अपने पास। हमें नहीं ज़रूरत तुम्हारे पैसों की मगर 'इतनी क्या जल्दी है कल चले जाना 'कह कर वह नोट पकड़ लेती है।

'शादी ब्याह की बात है। ढेरों काम पडे हैं करने को --तुम लोग ज़रूर आना।' भैया चलने लगे। मैं निवेदन करता हूँ- 'थैला मुझे पकड़ा दो, स्टेशन तक छोड़ आता हूँ '।

'अरे नहीं तुम आराम करो। थके टूटे आये होंगे। दफ्तरों में कौन सा कम काम रहता है। और यह शहर मेरे लिये नया थोड़े ही है। फिर अरुणा की शादी के बाद तो अब अक्सर यहाँ आना ही पड़ेगा।

भैया यूँ गर्दन झुकाये सीढ़ियाँ उतर रहे हैं जैसे सिर पर बहुत भारी बोझ उठए हुए हों। दरवाज़े में खड़ा मैं उन्हें जाते हुए देख रहा हूँ। सीढ़ियाँ उतर वे सामने वाले फुटपाथ पर चलने लगे हैं। निरन्तर आँखों से ओझल हुए जा रहे हैं। मन में आता है भाग कर उनसे जा लिपटूँ उन्हे वापिस ले आऊँ ज़ोर से चीख कर कहूँ--' आप क्यों चिन्ता करते हैं। दो चार हज़ार तो कुछ भी नहीं। इतना तो मैं अभी दे सकता हूँ। आपका मुझ पर हक है। यह सब आप की बदौलत तो है। मगर कदम आगे बढ़ा पाने से पहले ही वन्दना मेरा हाथ पकड़ लेती है और मैं यंत्रवत उसके साथ कमरे में जाने लगा हूँ।

(समाप्त)

अब हँसने की बारी है

प्रेषक - डा० नरेन्द्र अग्रवाल

१. स्वर्ग-नरक

बेटी - माँ मैं तो अधर्मी महेश से किसी भी कीमत पर विवाह नहीं कर सकती हूँ।
माँ - आखिर क्यों?
बेटी - वह स्वर्ग, नर्क और भगवान किसी भी चीज़ में विश्वास नहीं रखता है।
माँ - बेटी परेशान मत हो। तेरे पिता भी पहले यह सब नहीं मानते थे। शादी के एक साल तक स्वर्ग में फिर नर्क में और अब तो वे भगवान में भी पूरा पूरा विश्वास रखते हैं। फिर तू तो मेरी बेटी है। सब जल्दी ठीक हो जायगा

२. गहना

सास - बेटी अब तुम हमारे घर की बहू हो। याद रखो लज्जा को अपना गहना समझना और सदा पहने रखना।
बहू - हाँ, हाँ, माँ जी आज तो लूटपाट का ज़माना है, मैं कोई भी गहना नहीं पहनूँगी।

सूचनाएँ

१. **अंतर्राष्ट्रीय ८वीं हिन्दी विश्व महासभा** (१३ जुलाई से १५ जुलाई तक)
स्थान - न्यूयार्क, अमेरिका
अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित वेबसाइट देखिए-
www.vishwahindi.org
अन्य सहायता के लिए, भारतीय दूतावास के श्री वसंत कुमार को (०२) ६२७३ १३६५ पर कैनबरा में फ़ोन कीजिए - ९७४७ १६२८ अथवा निम्नलिखित ई-मेल पर सम्पर्क कीजिए-
hoc@hcindia-au.org

२. **साहित्य-संध्या** (शनिवार, ५ मई) और **संगीत-संध्या** (शनिवार, २ जून)
स्थान - वेवर्ली मेडोज़ प्राइमरी स्कूल, व्हीलर्स हिल, मेलबर्न
(मेलवे संदर्भ ७१ जी ११)
समय - रात के ८.०० बजे से १० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त जी को (०३) ९९४६ २५९५ अथवा
(०४०२)०७४२०८ पर फ़ोन कीजिए।

३. श्री किरीट भाई जी के व्याख्यान सुनिए और उनके साथ सत्संग का आनंद लीजिए
तिथि तथा समय - ८ मई से ११ मई तक
सायंकाल- ७ बजे से ९.३० बजे तक
१२ मई से १३ मई तक
दोपहर ३ बजे से शाम ७ बजे तक
स्थान - हंगेरियन कम्यूनिटी सेंटर, ७६० बरोनिया रोड, वानटिरना
अधिक जानकारी के लिए, निम्नलिखित पते पर ई-मेल भेजिए-
kbj_oz@yahoo.com.sg